

ग्रामोत्थान छात्रावास लाडनू, नागौर

1. छात्रावास का नाम व पता – ग्रामोत्थान छात्रावास लाडनू, नागौर

2. इतिहास – आजादी से पहले लाडनू कस्बे के ग्रामीण लड़कों के पढ़ने व रहने के लिए व्यवस्था नहीं थी। पांचवीं कक्षा से आगे पढ़ने वाले लड़के गाढ़ाबास, डीडवाना स्थित जाट छात्रावास में रहकर पढ़ते थे। आजादी के पश्चात् लाडनू में लड़कों व लड़कियों की 10वीं तक की एक स्कूल प्रारम्भ हुई तथा लड़कों की स्कूल में सीमित छात्रों के लिए आवासीय छात्रावास सुविधा भी थी। स्वतन्त्रता सेनानी चैनदासजी महाराज ने कुछ ग्रामीण लड़कों को अपने पास आवासीय सुविधाएँ प्रदान कीं। सन् 1955 के आसपास प्रीतमदास महाराज भी ग्रामीण लड़कों को अपने पास रखकर पढ़ाते थे। किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर के सन् 1956 के पंजीकृत दस्तावेजों के अनुसार ग्रामोत्थान छात्रावास लाडनू, मुख्य संस्थान किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर की शैक्षणिक उपशाखा थी लेकिन 22 अक्टूबर, सन् 1956 को शिक्षा निदेशक, बीकानेर द्वारा जारी आदेश में उपरोक्त छात्रावास का नाम सम्मिलित नहीं किया गया।

सन् 1961 में विधिवत रूप से ग्रामोत्थान छात्रावास लाडनू/जाट बोर्डिंग की स्थापना पंचायत समिति लाडनू के तत्कालीन प्रधान हरजीराम बुरड़क के प्रयासों से हुई। इस कार्य में रतनदास (निम्बाजोधी), ईशरदास (दुजार), बक्सीराम पूनियां (श्यामपुरा), पूर्णाराम मण्डा (सारडी), गुल्लाराम ठोलिया (शिमला), चतराराम चाहर (इन्द्रपुरा) का सराहनीय सहयोग रहा। उत्तर प्रदेश के वी.एस. तेवतिया को सबसे पहले यहाँ का वार्डन नियुक्त किया गया था। तेवतिया के बाद में वार्डन का दायित्व क्रमशः किसनाराम, मोतीराम, पंचायत समिति के एसडीआई अरोड़ा ने संभाला।

जयराम बुरड़क जिला परिषद् सदस्य (गाँव भरनावा) इस छात्रावास के प्रथम छात्रों में से एक थे। इनके अनुसार प्रथम वर्ष में करीब बीस छात्र रहते थे और छात्रावास में बिजली, पानी, किराया आदि का शुल्क नहीं लिया जाता था। इस तरह पूरे शहर में सबसे सस्ता यही छात्रावास था हालांकि यह छात्रावास सरकारी स्कूल से 2 कि.मी दूरी पर था फिर भी आवास के लिए छात्रों की मांग अधिक थी। इस समस्या के समाधान हेतु एक किराये का मकान गुर्जरों के बास में लिया गया।

सन् 1962-63 में छात्रावास की जमीन सन्त रामप्रसाद चेला चुतरदास से खरीदी गई। जमीन खरीदने व इसमें भवन बनवाने का श्रेय भी हरजीराम बुरड़क को जाता है। छात्रावास में इस समय कुल 16 कमरे हैं। कमरे बनाने वालों में हरजीराम बुरड़क, छोगाराम घोटिया (बाकलिया), पेमाराम साख (रताऊ), नानूराम कलवानिया (रींगण), रामदास (भीयाणी), डूंगरराम बिरड़ा (सुनारी), गीगाराम गौरा (से.नि.तहसीलदार, बाकलिया), डॉ. टीकाराम (बाकलिया), नेमाराम गोदारा (बालसमन्द), पदमाराम (बीचावा, डीडवाना), मोहनराम सारण (खोखरी), अमानाराम पूनियां (तहसीलदार, श्यामपुरा), रामधन बिरड़ा (सुनारी) व सोहनराम गोदारा के अलावा अन्य का भी सहयोग रहा।

कार्यकारिणी –

1. अध्यक्ष – श्री देवा राम जी पटेल
2. उपाध्यक्ष – श्री जयराम बुरड़क

3. सचिव – श्री श्रीराम साख
4. कोषाध्यक्ष– श्री कैलाश बिरड़ा
5. कार्यकारिणी सदस्य – डॉ. टिकाराम चौधरी
श्री गिरधारी जी
श्री पिथाराम जी सारण
श्री सोहनलाल जी

3. भौतिक संसाधन – 16 कमरें बने हुए हैं।
4. विद्यार्थी विवरण – वर्तमान में बन्द है।